R.N.I.- UP-
HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 24 | अंक 27 | रविवार, इलाहाबाद, 24 नवंबर 2024 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

हमने सोचा था तुम बिन रहेंगे नहीं ,
क्या पता था कि हम तुम मिलेंगे नहीं ।

डॉक्टर शिवानी चंद्रा की इन पंक्तियों में जीवन का वह सत्य उभरता है जो हर मनुष्य के हृदय पटल पर विराजित रहता है । मिलने-बिछड़ने की इस प्रक्रिया में उम्मीद मनुष्य के लिए सबसे बड़ा संबल है इसी संबल के बल पर अधिकतर पूरा का पूरा जीवन कट जाता है । आशा और निराशा की इसी जिजीविषा को शायद जीवन कहते हैं ।

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की निरंतरता इस बात

का परिचायक है कि आधी दुनिया की हकदार अपनी रचनाधर्मिता को लेकर कितने स्पष्ट रूप में कविताएं कर रही हैं । अपने आस-पास की बातों को उठाकर अपनी रचना में प्रस्तुत करना और बड़ी शिद्दत के साथ उसमें भावों का रस उड़ेलना छोटी बात नहीं है । इस विशेषांक से कुछ और बानगी देखिए

छलने लगा है समय ,
उदय-अस्त के बीच ।
चकरघिन्नी सा नचाता ,
क्षुधा पूर्ति-प्राप्ति का जाल ,
कुटिलता से फैलाता।

दूसरी बानगी

अंतर्मन की चक्षु से, अब तू देख जरा ,
उस दिव्य ज्योतिर्पुंज को अनदेखा न कर।
सूरज के सातवें घोड़े की पदचाप, सुन जरा ,
उमंग जगाती उन तरंगों को अनसुना ना कर ।।।

तीसरी बानगी

इसमें सब भाषाओं के शब्द,
भाषाओं का पर्याय हिंदी है।
देश है प्यारा अपना भारत,
भाषाओं की सरताज हिंदी है।

इस बार की पुरस्कृत रचना डॉक्टर शिवानी चंद्रा की है । उन्हें कोटि-कोटि बधाई । अंक कैसा लगा, प्रतिक्रिया अवश्य दीजिए ।

अंत में

जो लिखा जा रहा,
वही तो इतिहास होगा ।
जिंदगी का है फलसफा ,
यही तो पुरस्कार होगा ।

उमेश श्रीवास्तव

पुरस्कृत रचना

हमने सोचा था तुम बिन रहेंगे नहीं

हमने सोचा था तुम बिन रहेंगे नहीं,
क्या पता था के हम तुम मिलेंगे नहीं ।

सारे सपने सजाए तेरे संग में ,
तुझ को खो कर
कभी जी सकेंगे नहीं।

हाथ में हाथ मेरा तुम्हारा न हो,
ख़्वाब कोई भी ऐसा बुनेंगे नहीं ।

तारे गिन गिन के काटीं हैं रातें कई,
बिन तेरे दिन मेरे अब कटेंगे नहीं।

हम रहे दूर तुमसे हैं बरसों बरस,
तुम से दूरी सनम अब सहेंगे नहीं।

डा शिवानी चंद्रा

कवितायँ

ग़ज़ल

तुम बिछड़ने की इल्तिज़ा न करो
ज़ीस्त में मुझको ग़मज़दा न करो

फेरकर मुँह जो चल दिए मुझसे
रब्त का तुम यूँ खात्मा न करो

जो उसूलों का दम निकाले है
सामने उसके तुम झुका न करो

मुस्कुराहट रखा करो रुख पर
बात बेबात तुम अड़ा न करो

दिल की आवाज़ को सुनो दिल से
तुम कभी उसको अनसुना न करो

मैं हूँ इंसान मुझमें है खामी
पूज कर मुझको देवता न करो

ये ही तो ज़िन्दगी का हासिल है
ज़ख्मे-दिल की कोई दवा न करो

बाद मुद्दत के अब मिले हो 'अनु'
हमसे तुम कोई भी गिला न करो

अनीता सिंह 'अनु'

नारी का स्वरूप

जी हाँ मैं हूँ नारी,
युगों से ही मेरे हैं,
स्वरूप अनेक।
मैं हूँ, सिंचित धरा।
सृष्टि की रचयिता।
स्वरूप मेरा शाश्वत।
कटु सत्य चिरन्तन।
प्रतिमूर्ति हूँ मैं,
ममता ,प्यार ,दुलार ,
त्याग,सेवा भाव,की।
अन्नपूर्णा गेह की।
छाया रहूँ मैं नेह की।
शब्द ही अस्तित्व मेरा ।
सम्बल मैं शैशव काल की।
विस्तृत हूँ रेखा काल की ।
प्यार दुलार,मान मनुहार,
रचूं रंगोली,सखी, सहेली।
रूप सजीला ,आशाओं के,
नित दीप जलाऊं ।
मैं सम्बल हूँ सबला मैं।
नहीं रही अबला मैं।
प्रस्तर सा मेराअस्तित्व।
अडिग मेरा स्वाभिमान।
वर्जना, अवहेलनाओं,
का नहीं स्थान कोई ।
अब मुझे रोके न कोई।
सृष्टि का अवतार मैं।
मानवताकी रचयिता।
तीनों कालों की प्रणेता।
एक नया संसार रच दूं।
मैं नया इतिहास लिख दूँ।

प्रवीणा त्रिवेदी
नई दिल्ली

तन्हाइयाँ

तन्हाइयाँ हो गई हैं तन्हा
याद भी अब वीरान हो गई
आबादी भरे इस जहान में
सड़कें भी सुनसान हो गई।।

आइने में जो देखा खुद को
सीरत भी परेशान हो गई
सूरत तो खूबसूरत निकली
पर फितरत हैरान हो गई।।

शोहरत के नाम पर देखा
ये ज़िंदगी खुमार हो गई
विवाद भरा तन - मन में
बेवज़ह तक़रार हो गई।।

हर शख्स़ तन्हा जग में
हर सांझ गुमनाम हो गई
नकाब हर इक़ चेहरे पर
इंसानियत बदनाम हो गई।।

अवंतिका विशाल'अवि'

बेखुदी से अब...

बेखुदी से अब खुदी में आइए ,
ज़ीस्त की उलझन भी
अब सुलझाइए ,

गीत गाया प्रेमियों ने साथ मिल ,
चांदनी में फिर वो मंज़र लाइए ,

लिख दिया दीवान में हर दास्तां,
गुनगुना कर फिर ज़रा दुहराइए,

मीर ग़ालिब कह गए सारी ग़ज़ल ,
शब्द कुछ कह आप भी इतराइए,
जीत की खुशियां मनाना हो अगर ,
बन के धड़कन दिल में ऐसे आइए ,

उम्र भर रिश्ते निभाते ही रहे ,
पर खुद अकेले ही खड़े पछताइए,

दिल मुहब्बत में लरज़ना लाज़िमी ,
नर्म गोशों में छुपे शरमाइए ,

गर'मनोरम'मंजिलों की चाह हो
हमनवां बन राह भी दिखलाइए।,

बन के रहबर राह भी महकाइए ,

मनोरमा श्रीवास्तव मनोरम

माँ की स्तुति

हिरदय भवन बनाके,उसमें तुम्हें
बसाके माँ पूजा करूँगी तेरी
माँ सेवा करूँगी तेरी।

नवरात्री में मैया अपनी
नौ बहनों संग आना
हर्षित तन मन,
पुलकित अंग-अंग ऐसा रूप दिखाना
सुबरन कलश धराऊँ,
मोतियन की माल लाऊँ
पूजा करूँगी तेरी माँ
सेवा करूँगी तेरी।

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी
माता,चन्द्रघण्टा,कुष्मांडा

कवितायेँ

स्कंदमाता,कात्यायनी माँ, तू ही दुर्गामाता।
दुर्गति से माँ बचाओ,अपनी शरण लगाओ माँ
पूजा करूँगी तेरी माँ सेवा करूँगी तेरी

कालरात्रि माँ काल के भय से मुक्त करो महारानी
माँ गौरी सुख-सम्पति देती,सिद्धिदात्री रानी
नित ज्योति मैं जलाऊँ, पूजन हवन कराऊँ माँ
पूजा करूँगी तेरी
माँ सेवा करूँगी तेरी।

जो भी याचक द्वारे आता,मुख झोली का खोले
माँ भरती उसके भण्डारे जो माँ की जय बोले
मेरी अरज सुनो मां,
आँचल में अपने लो माँ।
पूजा करूँगी तेरी माँ सेवा करूँगी तेरी

डॉ सुषमा त्रिपाठी

माँ के सज गए दरबार

माँ के सज गए दरबार ,
आया नवरात्रों का त्योहार ।
लग गई भक्तन की कतार ,
सब तरफ हो रही जय जयकार ।
माँ के सज.....

छाई है रौनक घर द्वार ,
बंधे हैं चौखट वंदन वार ।
बज रहें मंदिर में घंटे की टंकार ,
भक्त चढ़ाएं अपनी माँ को प्यार ।
माँ के सज.....

माँ हरती सबके संकट हार ,
माँ बेड़ा लगाती पार ।
माँ खुशियों से भरती संसार ,
माँ अपने भक्तों से करती प्यार ।
माँ के सज.....

सच्चे मन से की गई पूजा करती स्वीकार ,
अच्छे विचारों को करती वो स्वीकार ।
कहे ङहंसाङ माँ आती है सबके द्वार ,
माँ खोलती सबके भाग्य के द्वार ।
माँ के सज.....

डा.योगिता सिंह 'हंसा'

अम्बे तान त्रिशूल

करें दनुज संहार अब, भक्तों का उद्धार तब,
रक्षा करती है माँ,अम्बे तान त्रिशूल ।
कल्याणी को पूजते, अज्ञानी बस बूझते,
कृपा दृष्टि अब रखना, करो क्षमा सब भूल ।।
शेरावाली अम्बिके,सतत परीक्षा दे थके,
शरण तुम्हारी आए ,चरणों की मैं धूल ।
माता अब स्वीकार कर ,हार पुष्प शृंगार कर ,
रूप सलोना देवी,चढ़ें सुवासित फूल ।।

नवरात्री त्योहार है,आस्था अपरंपार है,
घर घर पूजन होता,अर्पित हो फल फूल ।
भव्य मातु शृंगार है ,रत्न जड़ित गलहार है,
दिव्य रूप दृश मोहक, अम्बे तान त्रिशूल ।।
अधर सजी मुस्कान है, माँ का ऊँचा मान है,
चंड मुण्ड गलमाला,दनुज चाटते धूल ।
सरल हृदय पाते कृपा,
मिले आशीष हो अग्रपा,
भक्त वत्सला मैया,मिटे कष्ट का मूल ।।

सीमा वर्णिका

हे भवानी

हे भवानी महाशक्ति की स्वामिनी।
ज्ञान दे दो हमें ज्ञान की दायिनी।।

भक्त को मात तेरा सदा आसरा।
संकटों को करो दूर माँ तो जरा।।
हो कृपा आपकी मुस्कुराती रहूँ।
आपको यूँ सदा मैं मनाती रहूँ।।

हाथ माता रखो शीश पे सर्वदा।
दूर होती रहेगी सभी आपदा।।
विघ्न टाले यहाँ तू सभी शारदे।
पाप जो भी करे माँ उसे तार दे।।

भक्ति से ही मिले शक्ति सारी यहाँ।
माँ जपे आपका मंत्र सारा जहाँ।।
चाहिए ना मुझे तख्त औ ताज माँ।
ज्ञान भंडार मेरे भरो आज माँ ।।

श्रद्धा श्रीवास्तव

वाणी - वंदना

अविरल शीतल करो सृजन को,
शब्द शब्द है चंदन।
आज सकल हो जाएँ अतुलित,
करते हैं हम वंदन। ।
शब्द सुमन ये विकल हो रहे,
करने को अभिनंदन।
भव्य बना दो, उड़े गगन में,
मिले इन्हें स्पन्दन।।
रीत उर मेरा भरो मां,भावना के भेष में।
चाहता हूँ जा घिरूं मैं,वंचना के क्लेश में।
उलझ कर ही रह गयी मैं,कामना के केश में।
सोचती हूँ घूम लूँ मैं,साधना के देश मे ।।
हृदय हारी बन कर आओ,
आज मैं अर्चन करूंगी।
कर नया अभिषेक तेरा,आज मैं वंदन करूंगी।
आगमन कर अगिन हर लो,
नाज़मय नर्तन करूंगी।
नगन कर दो गगन मेरा,
विहग मन उन्मन करूंगी। ।
है प्रखर कोई न
मेरा,मात इस परिवेश मे।
रीता उर मेरा भरो माँ,भावना के भेष मे। ।

पूनम पाण्डेय (पतंग)

मेरी मां

मां का प्यारा सजा दरबार है,
देख मां की मूरत किसी और की मूरत
मुझे भाती नहीं है,
हाथ जोड़ झुकाया जो मस्तक तो मांगने की
आदत मां जाती नहीं है।
दिया बहुत कुछ तूने मुझे,
पर थोड़ी सी खुशियां लिख दो
मेरे जीवन रूपी कागज पर,
जो बिल्कुल कोरा है,
कभी कह ना सकूं, कि मुश्किल में मेरी मां ने
मेरा साथ छोड़ा है।
दुनिया का हर रिश्ता बेमतलब और बेईमानी है,
तू मां मेरी मैं बेटी तेरी,
भवसागर में डूबी मेरी नैया,
मां तुझे ही पर लगानी है।
नवरात्रि के नौ दिनों में,
मां तुम हर रूप में आती हो,
अपने सब भक्तों पर कृपा बरसाती हो,
हर कोई जाने तेरी महिमा को,
सब व्यथित हैं तेरे दर्शन पाने को,
तेरी भक्ति के सिवाय अब
मुझे कोई चीज लुभाती नहीं है,
मां का प्यारा सजा दरबार,
देख मां की मूरत किसी और की मूरत मुझे
भाती नहीं है,
हाथ जोड़ झुकाया जो मस्तक,
तो मांगने की आदत मां जाती नहीं है।

पुष्पा सिंह

मैया ओढ़े चुनरिया लाल

मैया ओढ़े चुनरिया लाल ,
चुनरिया मोहे प्यारी लागे।
मैया के माथे पर बिंदिया सोहे,
मांग सिंदुरवा लाल
की मैया मोहे प्यारी लागे।
मैया ओढ़े.....
मैया की नाक में नथनी सोहे,
होंठ सुराखिया लाल
की मैया मोहे प्यारी लागे।
मैया ओढ़े.....
मैया के कान में कुंडल सोहे,
गले मोतियन की माल
की मैया मोहे प्यारी लागे।
मैया ओढ़े.....
मैया कलाइयां में कंगना सोहे,
हाथ मेहंदिया लाल
की मैया मोहे प्यारी लागे।
मैया ओढ़े.....
मैया के पांव में पायल सोहे,
एडी महावर लाल
की मैया मोहि प्यारी लागे।
मैया ओढ़े.....

शिप्रा ज्ञानेंद्र सिंह

तुमसा कोई नही

दिल के कोने से निकाल,
जज़्बात तुम्हें अर्पित करती हूँ ।
जो अल्फ़ाज़ कह न सकी तुमसे
करवा चौथ पर समर्पित करती हूँ।
यहाँ आदमी तो बहुत हैं
पर इन्सान कोई तुमसा नही ।
यहाँ दोस्त तो बहुत हैं,
पर हमनवा कोई तुमसा नही।
यूँ तो लगते थे सब अपने,
परायों की इस भीड़ में,
भरोसा भी किया हमनें,
पर निकला रहनुमा ,
कोई तुमसा नही ।
तिनका तिनका जोड़ कर
घरोंदा तो हमने बना लिया।
इस गरजते बरसते मौसम में,
हमनफ़स कोई तुमसा नही। ।

दया शर्मा
शिलांग (मेघालय)

कैसे बचाएं बेटियों को

क्यों पढ़ाएं बेटियों को,
कैसे बचाएं बेटियों को,
जब अपना ही कोई नोचेगा उसे,
क्षत विक्षिप्त करेगा उसकी देह ,
लूटेगा उसकी आबरू,
किसे कहेगी अपना,
किसपर करेगी संदेह।
क्यों मर गया है आदमी का चरित्र,
क्यों मर गई है उसकी आत्मा,
कैसे आते हैं इतने विकृत विचार,
कौन पूछेगा उससे,
कौन देगा सजा,
क्या सजा देने मात्र से,
मिल जायेगी आजादी जीने की,
आगे बढ़ने के,
स्वछंद विचरने की,
कौन देगा उसे ये आजादी,
कब मिलेगी उसे ये आजादी।
कब दहलेगा पिचाश हृदय,
कब कांपेंगी उसकी आत्मा,
कब जागेगा समाज,
कब मांगेगा हिसाब,
क्या सदा हर बेटी को डर डर के जीना होगा,
क्या हर किसीको ये गरल पीना होगा।
हे कृष्ण! कब आओगे,
कब इन अनगिनत नरपिचाचों से
इस धरा को मुक्ति दिलाओगे।

नीता शर्मा
शिलोंग, मेघालय

एक दिवाली ऐसे भी!

दिवाली की रात, जगमग जगमग करती रात।
तारों भरा आसमान को धरती में लाने की रात।
पर धरती के कुछ कोनों में अंधेरे छाए हैं।
जहां दिवाली का एक दिया भी नहीं जला है
भूख से पीड़ित लोग,
उनमें से कुछ शराब से नहाकर बैठे हैं,
अंधेरा वहां बहुत गहरा,
कुछ साफ़ नहीं दिख रहा है,
शायद कुछ बच्चे भूख के कारण रो रहे हैं ,
कुछ औरतें भी जाने क्यों रो रही हैं,
शायद उनके शराबी पति उन्हें पीट रहे हैं,
दिवाली वहां नहीं पहुंची है
शायद कल-परसों तक पहुंचे!
धरती के उन कोनों में त्योहार
समय विशेष आते हैं,
अगर पेट भरे हों,
तो त्योहार।
नहीं तो दिया तले अंधेरे जैसे
दिवाली में भी अंधेरा छाया रहेगा।
एक दिवाली ऐसे भी!
जिसे देख दिवाली भी दुखी,
दिवाली भी शर्मिंदगी महसूस कर रही है -
जहां उजालों की चकाचौंध हो,
वहां यह अंधेरा एकदम साफ़ दिख रहा है-
कहते हैं दिवाली अंधकार से उजाले की ओर
ले जाने वाली त्योहार है।
पर जहां कुछ लोगों के मन में अंधेरा छाया हो,
वहां धरती के कुछ कोने अंधेरे में
होना लाजमी हैं ।

मल्लिका डे बिष्णु

हमनफस

लगता ही नहीं मुझे तुम नहीं हो पास
हर पल दिलाता है तुम्हारे होने का अहसास
दूर कहां हो तुम,मेरी सांसों में बसे हो
अ हमदम मेरे जन्म जन्म का हमनफस।
बदलता है वक्त, बदलता है नजारा
कल खुशहाल था, आज दूर है किनारा
लेकिन हर लम्हा होता है अपने आप में खास
और तुम हो मेरे लिए हो सबसे खास।
सुबह की किरणें कलियों को जगाती हैं
कलियों के पास आकर भंवरें मंडराते हैं
देखती हूं मैं और देखते हो
तुम भी खड़े रहकर मेरे पास
खामोशी है, दिल की हलचल दिलाती है
तुम्हारे होने का अहसास।
चोंच में तिनके लिए आती हैं गौरये कहीं से,
एक नया बसेरा,
नया संसार शुरू होता है यहीं से।
तुम खुश होते हो, कहते हो,'
खुशियां आईं हैं हमारे पास।'
तुम्हारे चेहरे पर चमकता है
मासूम सा उल्लास।
मेरी उदासी तुम्हें कतई गंवारा नहीं,
मेरे उलझे बालों पर उंगली फेरते हुए कहते हो,
'अभी तक संवारा नहीं?'
कंधे पर हाथ रख ढांढस बंधाते हुए कहते हो,
'मेरी हमनशीं मत हो उदास।'
क्या तुम सचमुच याद बन गए हो?
याद तो उनकी आती है जो दूर चले गए हो,
तुम तो मेरी जान हो,हर वक्त रहते हो पास
अ हमदम मेरे जन्म जन्म का हमनफस।

गीता लिम्बू
शिलांग -6

लिखना आसान नहीं...

एहसासों को सियाही से पिरोना आसान नहीं।
जब सोचते हैं कुछ लिखें
वो यादें, फरियादें आंखों के
आगे झलकती हैं।
इतना बोझ कागज़ उठा नहीं पायेगा
और हमसे ज़्यादा लिखा नहीं जायेगा।
खैर, मन हल्का होता है लफ्जों से
सूखे पत्ते गिरने पर
आवाज करते हैं और शायर,
अल्फ़ाज़ों में जान डालते हुए मरते हैं।
कहे हुए शब्द भुलाये जा सकते हैं
लिखा हुआ सच मिटाया नहीं जा सकता।
दुःख हल्का करना हो या सुख हो बाटना
कलाम की तलवार के लिए, ऐ दोस्त,
दो शब्द ही सही, तुम ज़रूर लिखना।

रीमा जोशी
शिलोंग, मेघालय

छलिया

छलने लगा है समय
उदय-अस्त के बीच
चकरघिन्नी सा नचाता
क्षुधा पूर्ति-प्राप्ति का जाल
कुटिलता से फैलाता।

समय को जीतने का संभ्रम
मुट्ठी में भरने का दम्भ
सीमित साँसों में असीम का भ्रम
देख, अट्टहास करता समय
पीढ़ियाँ बदलीं, गतिमान है समय।

डॉ अनीता पंडा 'अन्वी'

बादल

उन बादलों की तरह मुझेभी झूमना है,
आसमान को हनगाहों सेचूमना है,
खुलेआसमान मेंमुझेभी उड़ना है,
सुबह सेशाम तक अलग रंग में ढलना है,
आसमान को करीब देखकर
बेपरवाह नीले रंग सेप्यार
करना है,
हवाओं के साथ गुनगुनातेहुए बहतेचलेजाना है,
जलतेहुए हदलोंमेंबाररश की बूँद पहुँचाना है,
गुमनाम नहदयों के शोर को मेरी खामोहशयों
सेहमलाना है,
जहाँना पहुँच सके कोई वहाँबरसकर अपनी
पहचान
बनाना है,
मुझेबादल बनना है,
आजाद पररं दो के साथ मुझेभी उड़ जाना है।

मेघा पी यादव
शिलोंग, मेघालय

करते पितरों का तर्पण'

आओ श्राद्ध पक्ष में करते हम
पितरों का तर्पण।
तन- मन -धन से करते हम
पितरों का अभिनंदन।।

भारतीय संस्कृति है महान पितर भी पूजे जाते,
पितर हमें आशीष देने, पृथ्वी पर आ जाते।
उनके पद चिन्हों पर चलकर करते उनका
अर्चन। आओ श्राद्ध पक्ष में करते हम
पितरों का तर्पण।।

पितरों की पूजा करने से आती
घर में खुशहाली, सुख- समृद्धि ,
धन-बल आता शांति की हरियाली।
फूलें-फलें दुआओं से ,भावों का करते अर्पण।
आओ श्राद्ध पक्ष में करते हम
पितरों का तर्पण।।

ज्ञान - धर्म सब मिला उन्हीं के प्रतीक हुए हम,
सुंदर जीवन मिला है
उनसे हृदय से कृतज्ञ हुए हम।
मिलती हमें प्रेरणा शक्ति करते
मन से हम वन्दन।
आओ श्राद्ध पक्ष में करते, हम
पितरों का तर्पण।।

आओ नमन करें पितरों का क्षमा मांग ले उनसे
हाथ जोड़कर माफी मांगे भूल हुई जो हमसे
कृपा दृष्टि बनाए रखना
कष्टों का करना निवारण।
आओ श्राद्ध पक्ष में हम करते
पितरों का तर्पण।।

पितर हमारे आराध्य देवा मानवता-पाठ
सिखाया, त्याग दया और प्रेम ,
करुणा का रंग मन बरसाया।
उनकी सीखों पर चलकर गर्वित होता
तन- मन आओ श्राद्ध पक्ष में करते हम
पितरों का तर्पण।।

आशा जाकड़

एक बार फिर आ जाओ प्रभु

पिता चरण में नमन करें, ध्यान धरे दिन रात।
कृपा दृष्टि हम पर करें ,सिर पर धर दें हाथ,
भूल चूक सब क्षमा करें ,करें कृपा भरपूर।
सुख संपत्ति से घर भर, कष्ट करें सब दूर।
ङएक बार फिर आ जाओ प्रभुङ
यह कुटुंब है आपका सदा ही आशीर्वाद रहे,
फले- फूले सदा आपका ही परिवार।
आपका ऋण भारी सदा ,नहीं चुकाया जाए।
सात जन्म भी कम पड़े वेद पुराण बताये!!

अनीता दुबे

पितृपक्ष

पितृपक्ष पूजते सदा , रखें धर्म विश्वास।
वे तर्पण को मानते ,रखते मन में आस।।

सेवा पितरों की करें , कागा भोजन आज।
मात-पिता आशीष से , मंगलम् होय समाज।।

श्राद्ध पक्ष सोलह दिवस, मात-पिता के नाम।
उनकी सेवा चाह से, पूरण होते काम।।

जीवित की सेवा करो , मृत सेवा नकार ।
धर्म- कर्म को मान लो, सुत करना उपकार।।

पितरों सेवा प्रेम से, मिले सदा सम्मान।
तर्पण श्रद्ध जमाइए, गंगा में कर दान।।

मातृ पिता पूजा कर, उऋण सर्व हर कर्म।
शुद्ध बुद्धि दीजिए सदा, मानव तन है धर्म।।

सदियों से ये रही है, श्राद्ध पक्ष की रीत।
मनवा रोए आज भी, विदा हुए सब मीत।

उमा मिश्रा प्रीति

एक पाती दिव्यांग जनों को

उठ जाग, खोल अपनी बंद पलकों को
विश्वास जगा खुद में, अब तू नहीं अशक्त,
सात घोड़े के रथ पर सवार, आ रहा सूरज भी
उसी सूर्य से शौर्य लेकर,
कर अस्तित्व सशक्त...
अंतर्मन की चक्षु से, अब तू देख जरा
उस दिव्य ज्योतिर्पुंज को अनदेखा न कर,
सूरज के सातवें घोड़े की पदचाप, सुन जरा
उमंग जगाती उन तरंगों को अनसुना ना कर...
खुद पर हो विश्वास, और भरोसा हो पूरा
आसमां को छूते तेरे इरादे हो बुलंद,
लाख कमी है तो क्या, तेरे हौसलों से
झूमेगी सृष्टि... झूम उठेगा दिग-दिगंत...
तूने जाना खुद को ही हीन और कमजोर
नहीं है ऐसा कुछ भी, जैसा तूने माना है,
गढ़ा है विधाता ने जो तुझे इस रूप में
कुछ ना कुछ तो उसने, तुझमें जाना है...
अंतर में इक बार अपने, डूब कर तो देख
वहां कोने-कोने में, खजाने भरे पड़े हैं,
अपनी किस्मत आप लिख कर तो देख
देख! ताज पे तेरे, कितने रत्न जड़े पड़े हैं...
अनजान है अपनी शक्ति से तू खुद ही
तेरी कमियों में ही, छिपी पड़ी हैं खूबियां,
लिख ले कामयाबी की कहानियां खुद ही
खुद देखना एक दिन, झूम उठेगी दुनियां...।

शुभा भौमिक
बिलासपुर (छ.ग.)

हिन्दी मेरी, शान्

हिन्द देश की माटी पावन,
हिन्दी अजब रंगीली है।
वेद, पुराण की सभी ऋचाएँ,
हिय में, सबके घोली है।।

जग मे सबसे प्यारी भाषा,
श्री मुख सबके सजती है।
भगवत ज्ञान पुराण, वेद को,
सरल बना कर, कहती है।।

है सहोदरी संस्कृत की यह,
मीठी प्यारी बोली है।
हिन्दुस्तानी माटी से यह,
सदा खेलती होली है।।

अभिव्यक्ति को सरल बनाती,
शब्द सजा कर चलती है।
पावन हिन्दुस्तान है मेरा,
हिन्दी इसकी बोली है।।

शोभा त्रिपाठी 'शैव्या'

खुद को ढूंढ़ लाऊँगी

सूर्योदय के होते ही आत्मविश्वास मन में भर,
पुनः स्वच्छ नीले आसमान देखने की
मन में लालसा रख ,
जिंदगी के हर बंधन से मुक्त,
पिंजड़े से बाहर आ ,
एक न एक दिन सखियों संग अपना ,
मुक्ति पर्व मनाऊँगी और खुद को
ढूँढ़ लाऊँगी ।

आंखों में जल का दरिया भरकर निकलती ,
फूल सी मासूम परियों सी है लगती ,
चेहरे पर लोगों के कंटीली झाड़ियां सी दिखती
,
जमाने की भीड़ में इज्जत की उम्मीद क्या ल
गाती
जब खुद के ही घर में सहम खुद को ढूंढ़ ल
ाऊँगी?

धर्मग्रंथों की बातों में , देवी पूजन की विधियों
में ,
जघन्य अपराध भरी अधर्म की काली रातों में,
फूलों की लता में सर्प जैसी रस्सी बन झूल
ते हुए,

कवितायेँ

फिर इतने दर्द से लड़ते - लड़ते खुद को ढांकती ,
झरोखे से आती हवा से भी खुद को ढूंढ़ लाऊँगी ।

खामोश गुड़िया नहीं मैं जमाने की नज़रों को पढ़ ही लेती ,
कोख जिसकी से ईश्वर जन्मता वही
खुद की ही कोख में मारी जाती ,
हिरण सी छलाँग घर के अंदर ही लगाती ,
घर से लक्ष्मण रेखा पार करते ही रावण से चेहरे देखती ,
हादसों की हर मीनार में चिनवाकर भी
अब खुद को ढूंढ़ लाऊँगी ।

अपने आंचल में गमों के अफ़साने लिए ,
वक्त की छाती पर गुनहगारों का नाम लिख दिया है ,
आंचल के भारतीय न्याय संहिता से बांध ,
नीले आसमान तले हर मौसम में हँस कर कहती ,
शायद अब तो खुद को ढूंढ़ ही लाऊँगी ,
ढूंढ़ ही लाऊँगी ।

सरिता कपूर

अपनी हिंदी महान् है

अंग्रेजी का छोड़ दो मोह और गुणगान।
मातृभाषा अपनाओ सब अपनी हिंदी महान्
हिंदी अपनी चेतना हिंदी अपनी शान
आन-बान है ये अपनी मां वाणी का वरदान

हिंदी सुखद प्रभात है और सुनहली रात
गीत ग़ज़ल भजनों में हिंदी हिंदी में अपनी बात
तन मन में रमती है हिंदी हिंदी से सिंचित गात
हर भाषा है पुष्प सम पर हिंदी है पारिजात

हिंदी में बसते प्रेमचंद और पंत निराला दिनकर हैं
हिंदी के प्राण सूर तुलसी और भारतेंदु से मधुकर हैं
हिंदी महादेवी मीरा और सुभद्रा जी का गान है
कण कण में बसती है हिंदी हिंदी से हिंदुस्तान है

देवनागरी लिपि हमारी हमें जान से प्यारी है
इसके स्वर व्यंजन और शब्द से ही पहचान हमारी है
हिंदी अपनी सभ्यता संस्कृति और अपना त्योहार है
हिंदी अपनी धरती अंबर और अपना व्यवहार है

हिंदी हिंददेश की भाषा आओ इसका करें अभिषेक
भिन्न है अपनी भाषा भूषा और भिन्न अपना परिवेश
अलग-अलग फूलों से सजकर निखरा है अपना ये देश
भले भिन्नता हो कितनी भी हम हिंदी से हैं सब एक

अनामिका शर्मा 'अनु'

अर्चना

उसे सुलाने के लिए,
मुझे जागना पड़ा।
उसे चलाने के लिए ,मुझे भागना पड़ा।
उसे जितने के लिए ,मुझे हारना पड़ा।
और तब मुझे मानना पड़ा कि....
पशु पक्षी मनुष्य से बेहतर मां-बाप होते हैं,
छोड़ देते हैं वह समय आने पर,
अपने बच्चों को....
स्वतंत्रता से अपनी जीविका आप चलने के लिए,
अपना जीवन संघर्ष कर आप बचाने के लिए।
उनके पास अपने बच्चों के लिए कोई सौगात नहीं होती,
और इसलिए उनको अपने बच्चों से कोई आस नहीं होती।
और बच्चों के दिल भी उनकी तरफ से पाक- साफ होते हैं ,
इसीलिए पशु-पक्षी मनुष्य से बेहतर मां-बाप होते हैं।

ऋतुबाला रस्तोगी

अभी ! हारा नहीं हूं मैं...

कल रात बापू सपने में आए
संग अपने सत्य -अहिंसा की सौगातें लाए
मैंने कहा- बापू! अब इनकी जरूरत नहीं रही
आप नाहक ही, इन्हें संग अपने लाए
अब तो बेईमानी- भ्रष्टाचार का बढ़ रहा बोलबाला
सत्य -अहिंसा खड़ी-खड़ी कोने में शर्माए
और कुछ ऐसा विकास हुआ देश का
कि तस्वीरों के नीचे ही तेरी,
रिश्वतखोर मुस्कुराए,
संवेदनाएं चूक रहीं
अब तो लोग हिंसा की वीडियो बना- बना कर
इतराएं
सुन कर मेरी बातें हंसकर बोले बापू
फिर भी रख ले , बेटा !
कौन जाने !
किस मोड़ पर काम आ जाएं
और, देश की हालत से दुखी हूं
पर अभी हारा नहीं हूं मैं
तो आओ !
हम सब मिलकर
फिर से बीती बातें दोहराएं
और सत्य-अहिंसा अपनाकर
दुनिया को फिर से नई राह दिखाएं।

सुमन चौधरी सुमन
बिजनौर

ग़ज़ल

लगी है आग उलझन की बुझाया भी नहीं जाता
फँसी कश्ती भँवर में है बचाया भी नहीं जाता

सदा कुर्बानियाँ देती रही औलाद के खातिर
चढ़ा वो क़र्ज़ माँ का फिर चुकाया भी नही जाता

हज़ारों कोशिशों पर भी मिले जब हार तो समझो
मुक़द्दर में लिखा जो है मिटाया भी नहीं जाता

सवालों में जवाबों में उलझती ज़िंदगी देखी
कहाँ है ज़िंदगी का हल पढ़ाया भी नहीं जाता

छिपाकर अश्क आँखों में यही रचना सदा कहती
मिले जब घाव अपनों सें दिखाया भी नहीं जाता

रचना सक्सेना
प्रयागराज

हमारा श्रेष्ठ आर्यावर्त

हमें निज देश की अखंडता पे गर्व है,
संस्कृतियों का देश ये अनेक यहाँ पर्व हैं,
देश की स्वतंत्रता सा नहीं कोई पर्व है,
राम श्याम की वसुंधरा पे हमें गर्व है।

बहुरंगी विविधता ही इसका सौंदर्य है,
गंगा सी पवित्र नदियों का जहाँ जल है,
मानस ,पुराण ,गीता भागवत सा ग्रंथ है,
ऐसी धरा - धाम को दिल से नमन है।

स्वर्ग से देव भी कर रहे वंदन है,
पावन धरा में लिया जिन्होंने जनम है,
नदियों का स्रोत हिमालय सा जहाँ नग है,
देश की है आत्मा जो देश का तन है।

देवों के नगर से आई देवनागरी लिपि है,
धर्म ,ज्ञान ,संस्कृति की हुई जो आधार है,
कालिदास जैसे मूर्ख लिखते शाकुंतल हैं,
मरा नाम जपने वाले ब्रह्म के समान हैं।

अयोध्या,काशी ,मथुरा, सी जहां सप्तपुरी हैं,
राजा है प्रयाग करे पापों का जो नाश है,
कथकली, कुचिपुड़ी,अट्टम, मणिपुरी हैं,
संस्कृति सजीव किए नृत्य जो महान हैं।

गार्गी, अपाला, घोषा विदुषी जहाँ हुई हैं,
लक्ष्मीबाई,हाड़ा ,चेन्नम्मा सी बेटियाँ हैं,
भगतसिंह , बोस,पांडे से वीर हुए जहाँ ,
ऐसी भारतभूमि को नमन बार - बार हैं।

अनामिका तिवारी 'अन्नपूर्णा'

राम के गुण गान से

3 राम राम राम राम, राम मय सब हो लिये
राम के गुण गान से ,द्वेष सारे धो लिये

रघुवर तेरा रुप अलौकिक
चरित पावन गुण मर्यादित
मोहक छवि रसपान से
द्वेष सारे धो लिये
राम...

सीप में मोती ज्यों समाये
दीप में ज्योति लगन लगाये
हीय के दीप्तिमान से
द्वेष सारे धो लिये
राम...

कमलनयन तुम करुणामयी हो
भव भंजन तुम चिन्तामणि हो
सकल जगत कल्याण से
द्वेष सारे धो लिये
राम...

डॉ. मन्जू प्रकाश

ख्वाब एक दर्पण सा है,

ख्वाब एक दर्पण सा है,
जो दिखाती अपनी ही छवि।
उसे मंजर को व्यक्त किया तो,
दिखने लगी जैसे मैं कभी।
क्या बतलाऊं सफर था कैसा।
अंगारों पर पड़ा हो जैसा।
संघर्षों की लड़ियां टूटी,
टूटा था अंतस मन कभी।
बड़ी में चलती कलम की धारा।
शब्दों का ही खेल है सारा।
कहीं हृदय व्याकुल हो लिखे,
अपना जब अपनों से हारा।
नया दौर है नई उमंगे,
सागर की यह नई तरंगे।
आज महफिलों में रंग लाई,
दिए ताल पर ताल सभी।
कितनी इसमें उलझ गए और,
चमक जो बन गया रवि..

ममता पटेल

बदलता वक़्त है

बदलता वक़्त है उसमें हमारा साथ ठहरा है
शहर समता के मंच का हर पल सुनहरा है

ठहराव की जड़ता यहाँ बहाव बोती है
यादों की बारिश बरस सच से भिगोती है

एक आईना है समय का अखबार के ज़रिए
भाषा चिंतन से घूमते साहित्य के पहिए

धुँध के बादल धुँधलाना भूल जाते हैं
कुहासे में ओझल भी यहाँ सम्मान पाते हैं

महिला पुरूष गोष्ठियाँ चलती हैं अनवरत
विश्वव्यापी संवादों को खोलती परत दर परत

लहलहाती पौध सी खिली है युवा पीढ़ी
नए आयाम तय करेगी बनाकर लेखनी की सीढ़ी

उमेशजी का यह संसार खुद् से मिलाता है
जो यहाँ आता है यही का हो ही जाता है

डॉ कल्पना वर्मा

स्वर की देवी मैया

स्वर की देवी मैया शारदा भवानी हैं।
सुर सरगम की मां देवी कहायी है।
वीणा वाली मैया है इस संसार की ,
ज्ञान विद्या बुद्धि मां सबको प्रदान की।2
सूरदास ,तुलसीदास के काव्य में समाई मां ,
बाल्मीकि जी से रामायण लिखवाई मां,
रामचरित मानस की हो गई रचना
तुलसीदास जी के जब कलम में समाई मां।
वीणा वाली मैया है इस संसार की,
ज्ञान विद्या बुद्धि मां सबको प्रदान की।

विभा मिश्रा
अमेठी

हल्का सा इशारा जो कर दे

हल्का सा इशारा जो कर दे
तस्कीन मुझे मिल जाए न

तुझे कैसे चाहूँ तू ही बता
ये राज वो ही समझाये न

इक शाम कहा वो आयेंगे
इक शाम मुझे मिल जाए न

खुशबू सी महकती है राहें
फूलों को ये बतलायें न

रिश्तों की उम्र नहीं होती
कोई उनको समझाये न

है इश्क़ मेरा पैगंबर सा
सजदे में सर को झुकाएँ न

प्रो. रश्मि झा

ग़ज़ल

दिल के सोए हुए ज़ख्मो को जगाने निकले।
आज फिर बज़्मे मोहब्बत को सजाने निकले।

वो हँसी ख्वाब जो आंखों में सजाएं मैंने।
किस लिये आप वही ख्वाब चुराने निकले।।

भूल जाये न कहीं दिल ये तेरे जोरों सितम।
हम वही सोया हुआ दर्द जगाने निकले।।

तेरे बोसीदा खतूत आज भी हैं पस्य मेरे।
उन खातों से तेरी यादों के खजाने निकले।।

हर खुशी बख्शी है दिन के उजालों ने मगर।
चाँद निकला तो कई दर्द पुराने निकले।।

घेर रखा था जिसे ग़म के अंधेरों ने अज़ीज़।
हम उसी शाम को रंगीन बनाने निकले।।

अफरोज अजीज
दिल्ली

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- **तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-**

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

शहर समता समूह
उपलब्धियों का सफर
•95 से अधिक साहित्यिक विशेषांक प्रकाशित•
•महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक•
•पुरुष काव्यगोष्ठी विशेषांक•
•केंद्रित विशेषांक•
•नवांकुर काव्यगोष्ठी विशेषांक•
• विमर्श अंक•
•कवि और कविता विशेषांक •
•संस्थापक/संपादक•
उमेश श्रीवास्तव
शहर समता दैनिक/साप्ताहिक
288/238- ए कर्नलगंज
प्रयागराज - 211002
मोबाइल नं -
9005289332
प्रयत्न ही सफलता की कुंजी है।